~~राग~~

राग - तिलंग

आरोह - सा ग म प नि सां

अवरोह - सां नि॒ प म ग सा

पकड़ - ग म प, नि॒, प म, ग, म ग ।

थाट - खमाज

जाति - औडव - औडव

~~[illegible]~~ =

वादी - ग,

संवादी - नि

गायन समय - रात्रि का द्वितीय प्रहर

इसमें दोनों निषाद प्रयोग किये जाते हैं।

स्थाई

सजन तुम काहे न हरि गुण गावे ।
नाहक जनम गवायो सजन
तुम काहे न हरि गुण गावे ।

अंतरा

प्रेम गुण मोहित अखिल जगत भए,
काहे को सिर पट भेंत दू भाटे ।

Scanned with CamScanner

ग म प नि	सां - नि सां	नि प ग म	ग - सा -
ज न तु में	का ऽ है न	इ रि गु ण	गा ऽ ये स
3	X	2	0
ग म प नि	सा - ग म	प प नि नि	सां - सां सां
ज न तु में	गा ऽ इ क	ज न म ग	वा ऽ ये स
3	X	2	0
नि प म प	नि - नि सां	नि प ग म	ग - सा सा
ज न तु में	का ऽ है न	इ रि गु ण	गा ऽ ये स
3	X	2	0

अंतरा

ग म प नि	सां - सां सां	नि सां नि प	ग म ग ग
भ य गु ण	मो ऽ हि त	अ खिल ज ग	ग त य ह
3	X	2	0
सा - ग म	प प नि सां	नि प ग म	ग - सा सा
का ऽ है को	सि र प र	ले ऽ त तू	भा ऽ र स
3	X	2	0

Scanned with CamScanner